
Shri Parashurama Dashashloki

श्रीपरशुरामदशश्लोकी

Document Information

Text title : Shri Parashurama Dashashloki

File name : parashurAmadashashlokI.itx

Category : deities_misc, gurudev, nimbArkAchArya, dashaka

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Parashurama Dashashloki

श्रीपरशुरामदशश्लोकी



निम्बार्कसम्प्रदायस्य दिव्याचार्यं जगद्गुरुम् ।

श्रीमत्परशुरामञ्च देवाचार्यं समाश्रये ॥ १ ॥

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के देदीप्यमान अनन्त श्रीविलूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्कआचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यं मळाराज का परम मङ्गलकारी आश्रय लेते हैं ॥ १ ॥

श्रीहरिव्यासदेवस्य श्रेष्ठं शिष्यं नमाम्यहम् ।

असीमसिद्धिसम्पन्नं श्रीसर्वेश्वरचिन्तकम् ॥ २ ॥

अनन्त श्रीविलूषित जगद्गुरु निम्बार्कआचार्यपीठाधीश्वर “मळावाणीकार” रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यं मळाराज के कृपापात्र अति श्रेष्ठ शिष्य जो श्रीसर्वेश्वर प्रभु के प्रतिपल ध्यान में अभिरत एवं परमोत्तम सिद्धियों से परिपूर्ण श्रीपरशुरामदेवाचार्यं मळाराज को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं ॥ २ ॥

वृत्त्परशुरामाभ्य-सागरग्रन्थवेभकम् ।

सत्सनातनधर्मस्थप्रचारं निरतं भजे ॥ ३ ॥

“श्रीपरशुरामसागर” विशाल ग्रन्थ की आपश्रीने प्रेरणाप्रद

रचना से सबका हित किया है और अनादि वैदिक सनातन धर्म के प्रचुर प्रचार करने में अनवरत अभिरत रहते हैं । जैसे परमाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यं मळाराज का भजन-ध्यान करते हैं ॥ ३ ॥

वैष्णवधर्मरक्षार्थं विहरन्तं मरुस्थले ।

निम्बार्कतीर्थमागत्य ध्वने तत्परं भजे ॥ ४ ॥

इसी प्रकार अनादिवैदिक श्रुति-स्मृति-सूत्र-पुराणादि प्रतिपादित लोक कल्याणकारी वैष्णवधर्म की सर्वविध सुरक्षा के लिये मारवाड प्रदेश में सर्वत्र परिभ्रमण करते हुये “श्रीपद्मपुराण” में वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ पधार कर प्रतिदिन ध्वन करने में तत्पर रहते हैं । आज भी ध्वन कुण्ड इसी का प्रतीक है, जैसे आपश्री के मङ्गल स्वरूप का भजन-स्मरण करते हैं ॥ ४ ॥

यवनसिद्धिछेत्तारं हरिभक्तिप्रचारकम् ।

परशुराममाचार्यं वन्देऽहं नित्यशः सुधिम् ॥ ५ ॥

अपने सदुपदेशों के द्वारा उत्तम पुरुषों को श्रीराधाकृष्ण भगवान् की रसमयी भक्ति का प्रचार करने में सदा ही तत्पर और श्रीनिम्बार्कतीर्थ सभीपवर्ती रहने वाला मस्तिङ्गशाळ यवन हकीर जो अपनी पैशाचिक तान्त्रिक शक्ति से सन्त-महात्माओं एवं तीर्थ यात्रियों को अत्यन्त कष्ट देने वाले उस यवन हकीर की पैशाचिक सिद्धियों का निराकरण करने में परम समर्थ आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज का प्रतिपल स्मरण पूर्वक उनकी अभिवन्दना करते हैं ॥ ५ ॥

श्रीसर्वेश्वरसेवायां सर्वदा तत्परं भजे ।

ॐर्ध्वपुण्ड्रधरं यारु गोपीयन्तन्यर्थितम् ॥ ६ ॥

गोपीयन्तन से द्वादश अतिसुन्दर ॐर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करने पर अतीव शोभास्पद एवं अपने परमाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की दिव्य सेवा में सर्वदा अभिरत श्रीनिम्बार्क्यार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज का भजन-आराधन करते हैं ॥ ६ ॥

श्रीहरिवंशदेवस्य सद्गुरुं नित्यमाश्रये ।

तत्त्ववेत्तागुरं भक्त्या नमामि शास्त्रपारगम् ॥ ७ ॥

श्रीहरिवंशदेवाचार्यज्ज् के लुट्याराध्य श्रीगुरुवर्य का प्रतिदिन आश्रय ग्रहण करते हैं । श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों के परम ज्ञाता और श्रीतत्त्ववेत्ताज्ज् के गुरुवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज को भक्तिपूर्वक अभिनमन करते हैं ॥ ७ ॥

श्रीपीताम्बरदेवस्य गुरुवर्यं समाश्रये ।

परशुरामदेवञ्च वैष्णवाचार्यमीदृशम् ॥ ८ ॥

श्रीपीताम्बरदेवज्ज् के गुरुवर्य एवं अैसे वैष्णवाचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज जिनका आश्रय लेना परम छितकारी है ॥ ८ ॥

रामदेवगुरुं प्रेष्ठं लङ्कडेव (लावण्यदेव) गुरुं भजे ।

श्रीहरिवंशदेवञ्च पुनर्नमामि सादरम् ॥ ९ ॥

आपश्री के अेक और शिष्य जिनका नाम श्रीरामदेवज्ज् था अपर शिष्य श्रीलङ्कडेवज्ज् (श्रीलावण्यदेवज्ज्) भी थे । इस प्रकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज के यार शिष्य थे थे । इनमें प्रमुभ श्रीहरिवंशदेवाचार्यज्ज् थे, जो आचार्यपीठ पर विराजे । इन सभी के परम गुरुवर्य निम्बार्क्यार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यज्ज् मळाराज को सादर नमन करते हैं । इन शिष्यों का क्रमशः वर्णन इस प्रकार है । यथा-१। श्रीहरिवंशदेवाचार्यज्ज्, श्रीनिम्बार्क्यार्यपीठ पर, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में समासीन हुये । २। श्रीपीताम्बरदेवज्ज्, श्रीगोपाल मन्दिर, ग्राम यला जि। सीकर में विराजे । ३। श्रीतत्त्ववेत्ताज्ज्, श्रीगोपाल मन्दिर, जैतारण जि। नागौर में विराजे । ४। श्रीरामदेवज्ज्, श्रीगोपाल मन्दिर, छोटा नरेना जि। अजमेर में निवास किया । ५। श्रीलङ्कडेवज्ज् (श्री लावण्यदेवज्ज्) श्रीगोपाल मन्दिर, ग्राम कालपी जि। जालोन (उ।प्र।) में निवास किया ।

પીઠસ્ય પરમાચાર્ય વન્દેડલં શ્રદ્ધયા સદા ।

પરશુરામમાચાર્ય દેવાચાર્ય જગદ્ગુરુમ્ ॥ ૧૦ ॥

અનન્ત શ્રીવિભૂષિત જગદ્ગુરુ શ્રીનિમ્બાકાર્યપીઠાધીશ્વર શ્રીપરશુરામદેવાચાર્યજી મહારાજ કી શ્રદ્ધાપૂર્વક અભિવન્દના કરતે હૈ ॥ ૧૦ ॥

શ્રીમત્પરશુરામસ્ય દશશ્લોકી રસપ્રદા ।



રાધાસર્વેશ્વરાદ્યેન શરણાન્તેન નિર્મિતા ॥ ૧૧ ॥

“શ્રીપરશુરામ-દશશ્લોકી” જો પરમાનન્દ કો પ્રદાન કરને

વાલી હૈ, જિસકી રચના ઇન્હી શ્રીઆચાર્યપ્રવર કા અનુકમ્પા પ્રસાદ હૈ ॥ ૧૧ ॥

ઇતિ શ્રીપરશુરામદશશ્લોકી સમાપ્તા ।

Proofread by Mohan Chettoor

——
Shri Parashurama Dashashloki
pdf was typeset on January 28, 2023
——

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

